कृषि तकनीक
कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 151–152

कृषि तकनीक को किसानों तक पहुंचाने वाले कृषि विज्ञान केंद्र कैसे काम करते हैं

सूरज अवस्थी[1], डॉ. नीतीश पांडे[2], डॉ. उरूज आलम सिद्दीकी[3] एवं डॉ. कपिलदेव सिंह[3]

कृषि प्रसार[1], मौसम विज्ञान[2],
कृषि विभाग, इंटीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ
[3]कृषि प्रसार, कृषि विभाग,
चन्द्र भानु गुप्ता कृषि महाविद्यालय बीकेटी,लखनऊ, भारत।

Email Id: surajavasthi95@gmail.com

कृषि विज्ञान केंद्र क्या है

शुरूआती दौर में एक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में कार्य करने वाले कृषि विज्ञान केंद्र आज तकनीकी के परीक्षण, प्रदर्शन, प्रशिक्षण, प्रसार के साथ ही दूसरे कई कार्यक्रमों को किसानों तक पहुंचा रहे हैं। केवीके भारतीय कृषि अनुसंधान प्रणाली का एक अभिन्न अंग हैं।

जिस तरह लोगों को सेहतमंद रखने और जरूरी स्वास्थ्य सलाह देने के लिए जिस तरह से अस्पतालों में डॉक्टर उपलब्ध रहते हैं, उसी तरह ही किसानों की समस्याओं के समाधान और फसलों में लगने वाली बीमारियों के इलाज के लिए कृषि विज्ञान केंद्र भी काम करते हैं। हर जिले में किसानों की मदद के लिए एक या फिर दो कृषि विज्ञान केंद्र संचालित होते हैं जहां पर किसानों की हर एक समस्या के समाधान के लिए डॉक्टर यानी वैज्ञानिक मौजूद रहते हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि कृषि विज्ञान केंद्र की शुरूआत कैसे हुई और ये कैसे काम करते हैं? भारतीय कृषि हमेशा से पूरी तरह मौसम पर आधारित रही है। गांवों में प्राचीन समय से ही एक कहावत प्रचलन में रही है, कि खेती करना किसानों के लिए किसी जुआ खेलने से कम नहीं हैं। 1960 के दशक के बाद आई हरित क्रांति के बाद भी पूरे देश में एक समान खेती के विकास का लाभ किसानों को नहीं मिल पा रहा था। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पूसा, नई दिल्ली के विभिन्न शोध संस्थानों और कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा खेती–बाड़ी व उससे जुड़े विषयों पर किए जा रहे नवीनतम शोध इस दौर के बाद भी गांव, खेतों और किसानों तक नहीं पहुंच पा रहे थे।

खेती–

किसानी का ज्ञान प्रयोगशालाओं और शोध संस्थानों से निकलकर गाँव–किसानों तक कैसे पहुंचे इस दिशा में भारत सरकार द्वारा एक कार्य योजना तैयार की गई। इसी को मध्येनजर रखते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा कृषि विज्ञान केंद्रों को खोलने का अभिनव प्रयोग किया गया। इसकी शुरूआत पहला केवीके 1974 में पांडिचेरी में डॉ. मनमोहन सिंह मेहता की अध्यक्षता में गठित दल की रिपोर्ट आने के बाद लिया गया। तब से अब तक 46 वर्षों के कालखण्ड में देश के लगभग हर छोटे–बड़े जिलों में केवीके खोले जा चुके हैं। देश के कुछ बड़े जिलों में एक की बजाय दो केवीके खोले गये हैं।

इस समय सम्पूर्ण देश में लगभग 731 केवीके कार्य कर रहे हैं। यह सभी केवीके पूरे भारत में संचालित 11 कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थानों के तकनीकी मार्गदर्शन में कार्य करते हैं। अटारी के नाम से लोकप्रिय यह संस्थान लुधियाना, जोधपुर, कानपुर, पटना, कोलकाता, गुवाहाटी, बारापानी, पुणे, जबलपुर, हैदराबाद और बेंगलुरू में स्थापित हैं, जो कि केवीके के साथ समन्वय और निगरानी की भूमिका निभा रहे हैं।

शुरूआती दौर में एक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में कार्य करने वाले केवीके आज तकनीकी के परीक्षण, प्रदर्शन, प्रशिक्षण, प्रसार के अलावा नित्रोज अनेकों कार्यक्रमों को संचालित करने का सफल कार्य कर रहे हैं। केवीके राष्ट्रीय कृषि

अनुसंधान प्रणाली का एक अभिन्न अंग हैं। जो कि कृषि प्रौद्योगिकी के ज्ञान और संसाधन केंद्र के रूप में कार्य कर रहे हैं। जिसका मुख्य उद्देश्य प्रौद्योगिकी मूल्यांकन, शोध और प्रदर्शनों के माध्यम से कृषि और संबद्ध विषयों में स्थान विशिष्ट प्रौद्योगिकी मॉड्यूल का मूल्यांकन करना है। किसानों को तकनीकी से रूबरू कराने के लिए कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा प्रमुख रूप से विभिन्न कृषि प्रणालियों के तहतः कृषि प्रौद्योगिकियों की स्थान विशिष्टता का आंकलन करने के लिए ऑन फार्म परीक्षण किये जाते हैं। किसानों के खेतों में प्रौद्योगिकियों की उत्पादन क्षमता स्थापित करने के लिए प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन करना।

आधुनिक वैज्ञानिक कृषि प्रौद्योगिकियों पर अपने ज्ञान और कौशल को अद्यतन करने के लिए किसानों और विस्तार कर्मियों का क्षमता विकास करना। जिले की कृषि अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए सार्वजनिक, निजी और स्वैच्छिक क्षेत्र की पहल का समर्थन करने के लिए कृषि प्रौद्योगिकियों के ज्ञान और संसाधन केंद्र के रूप में काम करना हैं। किसानों की रूचि के विभिन्न विषयों पर आईसीटी एवं अन्य मीडिया माध्यमों का उपयोग करते हुए कृषि परामर्श प्रदान करने के अलावा गुणवत्तापूर्ण तकनीकी का उत्पादन करके किसानों को उपलब्ध कराना हैं। केवीके द्वारा अग्रिम पंक्ति की विस्तार गतिविधियों को संचालित करने के साथ ही कृषि नवाचारों को पहचान कर उनका दस्तावेजीकरण को भी बढ़ावा दिया जाता है।

सम्पूर्ण विश्व में नवीनतम कृषि तकनीकी को किसानों तक प्रभावी ढ़ग से पहुंचाने की यह एकमात्र और अनूठी परियोजना है। केवीके आज पूरे देश में अपनी अलग ही पहचान कायम कर चुके हैं। देश के हर जिले में केवीके आज फ्रंटलाइन एक्सटेंशन के अग्रणी पुरोधा बनके उभरे हैं। इन केंद्रों द्वारा अनिवार्य लक्ष्य के इतर दर्जनों प्रमुख कार्यक्रमों के साथ कई सारी परियोजनाओं का संचालन किसान, ग्रामीण युवक–युवतियों, पशुपालकों, कृषि उद्यमियों आदि के लिए किया जा रहा है। केवीके के द्वारा दी जा रही तकनीकी के प्रसार का ही प्रभाव है कि उन्नत तकनीकी आज गांव–किसानों तक पहुंच सकी है। किसान परंपरागत खेती–बाड़ी से निकलकर वैज्ञानिकता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। बेराजगार किसान युवक–युवतियां आदि उद्यानिकी, डेयरी व्यवसाय, बकरी पालन, मुर्गी पालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन से लेकर मछली पालन की ओर उन्मुख हुए हैं। किसानों में जैविक खेती की ओर भी रूझान देखा जा रहा है।

केवीके के द्वारा गांव–

किसानों के कल्याण में दी जा कृषि तकनीकी को और अधिक प्रभावी बनाया सकता है। इसके लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझावों को अमल में लाने की नीतिगत जरूरत है। जिला प्रशासन द्वारा आये दिन तकनीकी के इतर अन्य कार्यों में केवीके के वैज्ञानिकों को काम दे दिया जाता है जिससे इनका मुख्य वैज्ञानिक कार्य प्रभावित होता है। स्थानीय प्रशासन के हस्तक्षेप को कम करने के साथ ही इन केंद्रों को कृषि और उससे जुड़े तकनीकी विषयों के अलावा अन्य अनावश्यक कार्यों से अलग रखने की जरूरत है।

कृषि विज्ञान केंद्र की संरचना

कृषि विज्ञान केंद्र की संरचना में 16 लोगों का स्टॉफ रहता है। जिसमें वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रमुख–एक, विषय वस्तु विशेषज्ञ–छह, कार्यक्रम सहायक–तीन (फार्म मैनेजर, कम्यूटर प्रोग्रामर व लैब टैक्नीशियन), कार्यालय सहायक–एक, स्टैनो कम टाइपिस्ट–एक, वाहन चालक–दो (जीप व ट्रैक्टर), परिचर–दो। केवीके स्थापना के लिए कम से कम 20 हेक्टेयर जमीन का होना आवश्यक होता है।

कृषि विज्ञान केंद्र पर किसानो को मिलने वाली सुविधाए

- जिले के किसानो को खेती के लिए अनुकूल जलवायु की जानकारी प्रदान करना।
- भूमि और पानी की जांच करने की सुविधा।
- किसानो के खेतो पर ही उनकी समस्या का समाधान करने की सुविधा।
- किसानो को स्वरोजगार हेतु बकरी पालन, मछली पालन, मुर्गी पालन और डेयरी का प्रशिक्षण देना।
- महिलाओ को सशक्त बनाने के लिए गृह विज्ञान से संबंधित प्रशिक्षण देना।